**आज की मुरली का सार --** Date: 07-05-2014

**बाबा ने कहा, हम बच्चों को बाप की याद ऐसी पक्की हो जिसके लिए ही गायन हैं, अन्तकाल जो स्त्री सिमरे, ऐसे चिंतन में जो मरे....यहाँ वह स्त्री, मेरे प्राण-प्यारे, मीठे-मीठे शिवबाबा हैं.**

**हम सब कैसा पुरुषार्थ करें की इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन के अन्त में, जिसे एक विदेही बाप के सिवाय और कुछ याद न आयें.**

**- मनुष्यों ने लिखी गीता में अंतिम शब्द हे "नष्टो मोहा, स्मुति लब्धा" - हे आत्मा सर्व से मोह निकाल, एक मुझे याद करो. लेकिन उस गीता में तो ये स्पष्ट नहीं है की कलियुग के विकारों कि जंजाल में फसा हुआ मनुष्य, अपनी स्थिति ऐसी कैसे बना सकता हे.**

**- अब सत्य गीता ज्ञान दांता, परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा, मुक्ति-जीवनमुक्ति दांता शिवबाबा ने आ कर हम भाग्यशाली आत्माओं को ये ज्ञान दिया हे की कैसे हम, आत्माये, एक सत्य शिवबाबा की याद से, संपूर्ण पावन ओर श्रेंष्टाचारि बन कर, हमारी स्थिति ऐसी "नष्टो मोहा, स्मुति लब्धा" बना कर सच्ची गति-सद्गति को प्राप्त करें.**

**हम जीवात्माओं ने इस बेहद के ड्रामा में पार्ट बजाते, लास्ट 83 जन्मो से अन्य जीवात्माओं से ही सम्बन्ध रखे और इसके फल स्वरूप हम नीचे ही गिरते आयें, अब हमें सबसे ममत्व निकाल, एक विदेही (जिसको अपना शरीर नहीं हैं) बाप से ही सर्व सम्बन्ध का अनुभव करना हैं. लेकिन विदेही बाप से सर्व सम्बन्ध का अनुभव हम तब कर पायेंगे जब हम अपने खुद के शरीर से भी मोह निकाल दे और स्वयं के सत्य स्वरूप, आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास करें और एक विदेही बाप से सर्व सम्बन्धों का रस ले.**

**हमें अब पुराना शरीर, पुराने संबंध ओर पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल देना है. भक्ति में हम जिसे बार-बार पुकारते थे, आ कर हमें ये नरक से निकालो. वही भगवान, परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा शिवबाबा, हमें साथ ले जाने के लिए आये हे. बाबा ने कहा हे, वो हमें अपने नैनों पर बिठा कर ले जायेंगे. बाबा, हमारे लिए नयी सतयुगी दुनिया स्थापन करने के लिये आये है. सतयुग में कोई बीमार नहीं होगा, कोई दुखी नहीं होगा. प्रकृति भी संपूर्ण सतोप्रधान होगी. सर्वस्व सुख ओर शांति होगी. ऐसे-ऐसे विचार करने से पुराना शरीर, पुराने संबंध ओर पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल जायेगा ओर हम खुशी-खुशी बाबा की गोद में चले जायेंगे ओर बाबा हमें फिर नयी दुनिया में भेज देंगे.**

**सारे ज्ञान का सार हे, मेरा ये अन्तिम जन्म हे, मुझे खुशी-खुशी ये पुराने शरीर को त्याग कर मेरे प्यारे-प्यारे बाबा के साथ अब घर जाना है, फिर श्रीकृष्ण के साथ सतयुग में आना हे. ॐ शांति.**